अनन्य

'हिंदी की नयी उड़ान'

मासिक पत्रिका

जून-जुलाई 2023

रूस

अनुक्रम

सम्पादकीय: पृष्ठ संख्या

सफ़ेद रातों वाले दिन भी होते हैं – प्रगति टिपणीस 07

साक्षात्कार:

वर्तमान वैश्विक स्थिति और शिक्षा- अलेक्सेई मासलोव 09

आलेख:

महाकवि पूश्किन – हनी शर्मा 'तोल्सकी' 15

सफ़रनामा:

खुले आसमान के नीचे वनस्पति उद्यान – ज़ुल्फ़िया नागपाल 18

संस्मरण:

हरिशंकर परसाई शताब्दी वर्ष – विविध 21

अनुभव:

मई महीने में हुईं मनमोहक मुलाक़ातें - सम्पादक 24

कविताएँ: अलिक्सान्दर सिर्गेयविच पूश्किन 23

अनुभव:

व्लदीमिर बनाम गोरेलाल – व्लदीमिर त्येख़मेस्त्रुक 30

वर्तमान वैश्विक स्थिति और शिक्षा

अलेक्सेई अलेकसांद्रविच मासलोव

प्रोफ़ेसर अलेक्सेई अलेकसांद्रविच मासलोव इतिहासविद्, चीन तथा एशियाई देशों के प्रमुख रूसी विशेषज्ञ, मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय के एशिया और अफ़्रीका संस्थान के निदेशक हैं। ये 21 पुस्तकों और सौ से अधिक शोधात्मक लेखों के लेखक हैं। ये लगातार अग्रणी रेडियो और टीवी चैनलों पर शिक्षा तथा वर्तमान वैश्विक स्थिति आदि विषयों पर अपने विचार साझा करते रहते हैं।

www.amaslov.me

अलेक्सेई मासलोव के साथ अनन्य-रूस की संपादक प्रगति टिपणीस की बातचीत

प्रगति - भारत-रूस के वर्तमान संबंधों के बारे में आपके क्या विचार हैं?

मासलोव - मेरे ख़याल से रूस-भारत के संबंधों में वर्तमान में काफ़ी तेज़ी से विकास हुआ है। इसके तीन मुख्य कारण हैं। निस्संदेह पहला कारण अच्छे पड़ोसी देश होने का हमारा इतिहास है। हमारे संबंधों की नींव सोवियत संघ के गठन के काफ़ी पहले पड़ चुकी थी, सोवियत सत्ता के समय उसे मज़बूती मिली और आज भी रूस भारत के प्रति सौहार्दपूर्ण मनोभाव रखता है। अगर सवाल यूँ रखा जाए कि रूस का आमजन एशिया के किस देश को अपना सबसे क़रीबी मानता है तो जवाब निश्चित रूप से भारत होगा।

तीनों देश अपनी सभ्यताओं, आकांक्षाओं, उद्देश्यों के आधार पर बहुत भिन्न हैं। आज सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा एक साझा मंच ढूँढ़ने का है। किसी भी स्थिति में हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह त्रिभुज कुछ देशों के विरुद्ध, पश्चिम के विरुद्ध लक्षित है। हमें अपने सहयोग का सकारात्मक उद्देश्य तलाशना होगा।

दूसरा कारण वर्तमान राजनीतिक स्थिति है। हमने यह पाया है कि वर्तमान स्थिति का आकलन करने में भारत ने बहुत संयम और समझदारी का परिचय दिया है। भारत अच्छी तरह से यह समझता है कि दुनिया में बड़े परिवर्तन आ रहे हैं और आज आवश्यकता शांत और संतुलित निर्णय लेने की है। रूस भारत के इस रवैये की बहुत सराहना करता है।

तीसरा कारण मेरे अनुसार यह है कि रूस में भी स्थिति बदल गई है। क्योंकि लंबे समय तक रूस अन्य देशों को मुख्य रूप से चीन को अपना मुख्य साझेदार मानता था। लेकिन स्थिति के बदलने से रूस यह स्पष्ट रूप से समझता है कि दुनिया मात्र चीन तक सीमित नहीं है; भारत भी हमारा पुराना और अच्छा साझेदार है। इस धारणा के फलस्वरूप संबंधों में बड़े पैमाने पर सुधार हुए हैं। साथ ही ये सुधार ठोस हैं और मात्र बातचीत और घोषणाओं तक सीमित नहीं हैं। लम्बे समय तक हम (भारत और रूस) केवल आपसी दोस्ती की बातें करते रहे थे लेकिन आर्थिक सहयोग बहुत कम रहा था। लेकिन आज हम पेट्रोलियम सहयोग में तेज़ वृद्धि देख रहे हैं, परिवहन के क्षेत्र में सहयोग देख रहे हैं और यह सहयोग परिवहन के प्रत्येक क्षेत्र - रेलवे, सड़क, समुद्र - में हो रहा है। यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात है। साथ ही हमारे यहाँ भारतीय वस्तुओं की ख़रीद एवं आपूर्ति बढ़ रही है और यह केवल पारंपरिक उत्पाद चाय तक सीमित नहीं है। आज कपास, सूती वस्तुओं और विभिन्न खाद्य उत्पादों की माँग और आपूर्ति बढ़ रही है। अधिकाधिक भारतीय व्यापारी हमारे यहाँ आ रहे हैं। हालांकि अभी

मुख्यत: लघु और मध्यम व्यवसाय ही भारत से हमारे यहाँ आए हैं लेकिन मुझे उम्मीद है कि बड़े व्यवसाय भी ज़ल्द ही आएँगे। यह सब देखकर मुझे लगता है कि रूस-भारत संबंधों के विकास को बड़ा आवेग प्राप्त हुआ है।

प्रगति - आजकल भारत-रूस-चीन के संबंधों के बारे में बहुत चर्चा होती है। क्या आपके अनुसार यह त्रिभुज है? रूस और चीन के बीच बढ़ती समीपता क्या भारत-रूस सम्बन्धों में बाधक हो सकती है?

मासलोव - मेरा मानना है कि यह त्रिभुज अभी अस्थाई है, इसलिए नहीं कि कोई एक भुजा अन्य भुजाओं पर भारी है बल्कि इसलिए कि अभी तक उसके गठन के आम सिद्धांत निर्धारित नहीं हुए हैं। तीनों देश अपनी सभ्यताओं, आकांक्षाओं, उद्देश्यों के आधार पर बहुत भिन्न हैं। आज सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा एक साझा मंच ढूँढ़ने का है। किसी भी स्थिति में हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह त्रिभुज कुछ देशों के विरुद्ध, पश्चिम के विरुद्ध लक्षित है। हमें अपने सहयोग का सकारात्मक उद्देश्य तलाशना होगा। हमारे साझे कार्यक्रम का सकारात्मक उद्देश्य समग्र सुरक्षा हो सकती है। हमें फिर सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता को मान्यता देनी होगी। यह उद्देश्य व्यापार और शुल्क मुक्त व्यापार क्षेत्रों का गठन यानी शुल्क मुक्त आर्थिक क्षेत्र का गठन हो सकता है। ऐसा मुक्त आर्थिक क्षेत्र, उदाहरण के लिए, चीन और भारत की सीमा पर लद्दाख में हो सकता है। यह सहयोग की दिशा में एक बड़ा क़दम होगा। सभी प्रतिभागियों के लिए परिवहन के समान शुल्क निर्धारण भी एक उद्देश्य हो सकता है। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमें त्रिपक्षीय प्रारूप में अधिक से अधिक संवाद करने की आवश्यकता है। हमारे बीच अभी बहुत कम संवाद होता है या संवाद कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित है जैसे शिक्षा और व्यवसाय। और वह पर्याप्त नहीं है। हमें संभवत: नियमित रूप से सम्मेलन आयोजित करने चाहिए, और तीनों देशों को निर्धारित सिद्धांतों के एकल घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने चाहिए। तब यह त्रिभुज एक बढ़िया कामकाजी संरचना बन सकेगा। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि दुनिया में कई ऐसे संगठन हैं जहाँ सदस्यों के बीच विरोधाभास है, इसके बावजूद वे संगठन अपना काम जारी रखते हैं, जैसे ब्रिक्स। इसलिए मुझे लगता है कि हमें इस त्रिभुज की कामकाजी संरचना बनाने की तरफ़ बढ़ना चाहिए, उससे कोई नुकसान नहीं होगा।

हमें अपने सहयोग का सकारात्मक उद्देश्य तलाशना होगा। हमारे साझे कार्यक्रम का सकारात्मक उद्देश्य समग्र सुरक्षा हो सकती है। हमें फिर सभी देशों की क्षेत्रीय अखंडता को मान्यता देनी होगी। यह उद्देश्य व्यापार और शुल्क मुक्त व्यापार क्षेत्रों का गठन यानी शुल्क मुक्त आर्थिक क्षेत्र का गठन हो सकता है

प्रगति - वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आज भारत की छवि एक आर्थिक दृष्टि से मज़बूत और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से अग्रणी देश की है। लेकिन रूस के कई मीडिया गृह भारत को आज भी झोपड़पट्टियों और दरिद्रों का देश या फिर बतौर अद्भुत अथवा अजीब देश दिखाते हैं। क्या भारत की ऐसी तस्वीर छात्रों या युवा पीढ़ी को वर्तमान भारत या उसके गहन अध्ययन से दूर नहीं करती? क्या आपके संस्थान में शिक्षा पा रही भारत-विशेषज्ञों की नई पीढ़ी इस स्थिति को बदलने में कामयाब हो सकेगी? मेरी जानकारी के अनुसार एशिया और अफ़्रीका संस्थान तथा रशिया टुडे न्यूज़ एजेंसी एवं रेडियो स्पुतनिक के बीच सहयोग काफ़ी अच्छा है।

मासलोव - नि:संदेह यह नई पीढ़ी का समय है। सोवियत और पुरानी पीढ़ी के लोगों के विचार भारत के बारे में बिल्कुल अलग थे। और दुर्भाग्य की बात यह है कि अब तक कई रूसियों के लिए भारत की छवि बॉलीवुड, नृत्यों, हाथियों और राजकपूर का देश होने की है - यानी एक ऐसे भारत की है जो अब नहीं है। भारत ने बहुत विकास कर लिया है और आज मुख्य मुद्दा निस्संदेह सांस्कृतिक, व्यावसायिक और तकनीकी जानकारी की सही प्रस्तुति का है। मुझे खेद के

साथ कहना पड़ रहा है कि मैं आपकी इस बात से सहमत हूँ कि हमारे देश के लोग भारत के बारे में बहुत कम विश्वसनीय जानकारी रखते हैं।

मेरे ख़याल से हम इसे सुधार सकते हैं। भारत और भारत से सम्बद्ध विषयों का अध्ययन कर रहे छात्रों के प्रशिक्षण में हमने उल्लेखनीय रूप से विस्तार किया है। ये भाषाशास्त्र के छात्र हैं, इतिहास और राजनीति विज्ञान के छात्र हैं जिनका अध्ययन क्षेत्र भारत है। आज ये न केवल भारतीय भाषाएँ सीखते हैं बल्कि भारत की परंपराओं और प्रौद्योगिकियों से भी अच्छी तरह परिचित हैं।

भारत ने बहुत विकास कर लिया है और आज मुख्य मुद्दा निस्संदेह सांस्कृतिक, व्यावसायिक और तकनीकी जानकारी की सही प्रस्तुति का है। लिए भारत की छवि बॉलीवुड, नृत्यों, हाथियों और राजकपूर का देश होने की है - यानी एक ऐसे भारत की है जो अब नहीं है। भारत ने बहुत विकास कर लिया है और आज मुख्य मुद्दा निस्संदेह सांस्कृतिक, व्यावसायिक और तकनीकी जानकारी की सही प्रस्तुति का है।

अगले वर्ष से हम आधुनिक भारत से सम्बद्ध नए पाठ्यक्रम शुरू कर रहे हैं। यानी वे छात्र हिंदी तो सीखेंगे और बोलेंगे ही, साथ ही वे आधुनिक भारत को नज़दीकी से जानेंगे। दूसरी बात यह है कि आज सभी अग्रणी सूचना इदारों में हमारे स्नातक सफलतापूर्वक काम कर रहे हैं। दरअसल, आज हम 'राशिआ टुडे' और 'स्पुतनिक' जैसी एजेंसियों के साथ मात्र गहन सहयोग ही नहीं कर रहे बल्कि हम संयुक्त रूप से कार्यक्रम भी तैयार करते हैं। हम उद्योग और व्यापार मंत्रालय एवं निर्यात विभाग के साथ भी एक संयुक्त कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे स्नातक छात्र भारतीय व्यापार मिशन में काम करेंगे। हमारा कार्य उन्हें उच्च स्तर के पेशेवर बनाना तो है ही, साथ ही भारत के बारे में अधिकाधिक जानकारी से लैस करना भी है; अपने संस्थान के छात्रों तथा भारतीय छात्रों और विशेषज्ञों के बीच संयुक्त वार्ताएँ, कार्यक्रम आदि आयोजित करना है। हमें आज अधिक जानकारी की आवश्यकता है, और यह केवल मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग के ही नहीं बल्कि रूस के अन्य क्षेत्रों के लोगों के सन्दर्भ में भी है। मॉस्को में तो लोग भारत के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हैं, लेकिन सुदूर पूर्व के लोगों की तो यह जानकारी बहुत कम है। हमारा वर्तमान उद्देश्य भारत के साथ संपर्क केंद्र और थिंक टैंक आदि खोलना है। थिंक टैंक बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि हमें शिक्षा, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत उसके बाद स्वाभाविक रूप से रूसियों के सामने एक दूसरे देश यानी आधुनिक देश के रूप में प्रस्तुत होने लगेगा।

आज भी केवल भारत के साथ ही नहीं बल्कि एशिया के सभी राष्ट्रों के साथ संबंधों को मज़बूत बनाने में लगे सभी अधिकारी हमारे संस्थान के स्नातक हैं। रूस के राष्ट्रपति के प्रेस सचिव श्री पेसकोव भी हमारे स्नातक हैं।

प्रगति - विज्ञान, तकनीक और शिक्षा के क्षेत्रों में आप भारत-रूस सहयोग की क्या सम्भावनाएँ देखते हैं? इसमें आपका संस्थान क्या भूमिका निभा सकता है? जहाँ तक मुझे मालूम है आप भी इसी संस्थान की उपज हैं। आपकी मुख्य भाषा क्या थी?

मासलोव - मेरी पहली भाषा चीनी थी। मैंने वर्ष 1986 में एशिया और अफ़्रीका संस्थान से स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। दरअसल, हमें संस्थान का दर्जा इसलिए प्राप्त है क्योंकि हर साल लगभग 200 लोग ही हमारे संस्थान से स्नातक की उपाधि प्राप्त करते हैं और किसी विश्वविद्यालय की तुलना में यह संख्या बहुत छोटी है। इसके बावजूद हमारे स्नातक मंत्री और उप मंत्री बनते हैं। आज भी केवल भारत के साथ ही नहीं बल्कि एशिया के सभी राष्ट्रों के साथ संबंधों को मज़बूत बनाने में लगे सभी अधिकारी हमारे संस्थान के स्नातक हैं। रूस के राष्ट्रपति के प्रेस सचिव श्री पेसकोव भी हमारे स्नातक हैं। भारत के हमारे राजदूत हमारे संस्थान के पूर्व छात्र हैं, चीन के रूसी राजदूत भी हमारे छात्र रहे हैं। ऐसी क्या बात है जो हमें विशिष्ट बनाती है? हम किसी भी संस्कृति का अध्ययन मात्र ऊपर से नहीं, उसकी जड़ों से करते हैं उसके अंदर उतर कर करते हैं। हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि अमुक मुद्दे पर हमारे साथी ऐसा क्यों सोचते हैं। यह समझने की कोशिश करते हैं कि वे क्या सोचते हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, उनका इतिहास कैसा रहा है। संस्कृति का अध्ययन करते समय हम भारत को एक इकाई नहीं बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के एक देश के रूप में देखते हैं। उदाहरण के तौर पर हम यह समझते हैं कि गुजरात और केरल इसलिए भिन्न हैं क्योंकि उनके इतिहास और संस्कृतियाँ अलग रही हैं। अगर इस प्रकाश में देखा जाए तो हम बहुत ही कम पेशेवर स्नातक तैयार करते हैं और इसीलिए आज भी एशिया और अफ़्रीका संस्थान अपने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में लगा है। हमारे सामने देश के उच्चतम स्तर से यानी नेतृत्व की तरफ़ से अफ़्रीका और एशिया के साथ काम करने के लिए बेहतरीन विशेषज्ञ तैयार करने के अग्रणी केंद्र बनने का कार्य रखा गया है। इसका अर्थ सिर्फ़ नए पाठ्यक्रम बनाना नहीं हुआ, इसके तहत नई शिक्षण प्रौद्योगिकियाँ आती हैं, ये नए प्रकार के प्रशिक्षण से भी सम्बद्ध हैं। एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि रूस में इस वर्ष राजकीय स्तर पर प्राच्य और अफ़्रीका विदों के प्रशिक्षण के लिए नया कार्यक्रम अपनाने की योजना है। इसका अर्थ यह हुआ कि शिक्षकों और छात्रों के प्रशिक्षण का - रूस में और सम्बंधित देशों में - वित्तपोषण राजकीय स्तर से होगा। हम भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर सकेंगे। कुछ विश्वविद्यालय जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पारंपरिक रूप से हमारे साझेदार रहे हैं, अब हम नए विश्वविद्यालयों जैसे गोवा विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी शुरू कर रहे हैं, यह विविधता हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में हम रूसी सरकार, रूसी राष्ट्रपति प्रशासन के लिए एक विश्लेषणात्मक केंद्र के रूप में कार्य कर रहे हैं और हम उन्हें भारत में आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं व्यापार के विकास - यानी भारत की शुल्क प्रणाली और वहाँ के निवेश-वातावरण - आदि के बारे में जानकारी उपलब्ध कराते हैं। हम भारतीय संगठनों के साथ सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए सहयोग करना चाहते हैं। इस दिशा में हम पूर्णतः स्पष्ट हैं और हमारे साथ संयुक्त संगठन बनाने के लिए हम भारतीय संगठनों का स्वागत करते हैं।

हम यह समझने की कोशिश करते हैं कि अमुक मुद्दे पर हमारे साथी ऐसा क्यों सोचते हैं। यह समझने की कोशिश करते हैं कि वे क्या सोचते हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, उनका इतिहास कैसा रहा है। संस्कृति का अध्ययन करते समय हम भारत को एक इकाई नहीं बल्कि विभिन्न संस्कृतियों के एक देश के रूप में देखते हैं।

हम भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग कर सकेंगे। कुछ विश्वविद्यालय जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पारंपरिक रूप से हमारे साझेदार रहे हैं, अब हम नए विश्वविद्यालयों जैसे गोवा विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी शुरू कर रहे हैं, यह विविधता हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रगति - आज हम सभी इस बात को बहुत अधिक महसूस करने लगे हैं कि दुनिया का एक बहुत बड़ा हिस्सा पश्चिमी प्रचार-प्रसार की चपेट में है, और हम यह भी जानते हैं कि भविष्य युवा पीढ़ी के हाथों में है। क्या हमारे देशों के छात्रों के बीच सक्रिय सहयोग दुनिया के भविष्य को प्रभावित कर सकेगा? इसके लिए क्या करने की ज़रूरत है?

मासलोव - मैं अपना उत्तर दुखद बात से शुरू करूँगा। मुझे ऐसा लगता है कि मौजूदा दौर एक सबसे कठिन और दुखद दौर है। इसका कारण यह है कि हम सब एक भ्रम में थे, एक झूठ पर विश्वास करके बैठे थे कि लोग एकता और भाईचारे की ओर बढ़ रहे हैं, हमें लगने लगा था कि लोगों के बीच पारस्परिक सहृदयता, सद्भावना होगी। यानी हम सब अंदर से बौद्ध हो गए थे। लेकिन दुर्भाग्य से संसार निर्वाण नहीं है। हमारा यह विश्वास भी था कि हमारे साथी भी ऐसा ही सोचते हैं। आज हमें दो दिशाएँ विकसित करने का काम करना है। पहला यह कि हमारे बच्चे, हमारे छात्र खुले दिमाग के साथ यह समझ बनाएँ रखें कि दुनिया में बहुत विविधता है, कि रूस संयुक्त राज्य अमेरिका जैसा नहीं है और भारत रूस जैसा नहीं। यह विविधता आदान-प्रदान का आधार बननी चाहिए, न कि युद्ध का कारण। हमें यह भी समझना चाहिए कि प्रत्येक देश के साथ उसकी ऐतिहासिक नियति जुड़ी होती है और हमें उसका सम्मान करना चाहिए। पहली चीज़ जिसका हमें विकास करना है - वह है सबके प्रति सम्मान की समझ और दूसरी है अपनी राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति सम्मान विकसित करने की आवश्यकता। क्योंकि जैसा हम समझ चुके हैं कि कुछ भी सार्वभौमिक नहीं है और न ही हो सकता है। सभी अपनी संस्कृति के वंशज होते हैं और मुझे लगता है कि युवा पीढ़ी को हमारी इन ग़लतियों, हमारे इन भ्रमों से बचाया जाना चाहिए। मैं फिर दोहराता हूँ कि हमें और अधिक संवाद करने की ज़रूरत है। यह दुःख की बात तो है लेकिन स्पष्ट है कि हमें इतिहास की नई पाठ्यपुस्तकें लिखनी होंगी, संभवतः तकनीकी संपर्क के नए मानक भी बनाने होंगे और जल्द ही 10-20 वर्षों में आज़माइश के नए दौर से गुज़रना होगा। और अंततः हम नहीं, आने वाली पीढ़ी संवाद के बिलकुल नए स्तर बनाएगी। और इसी पीढ़ी के लिए हम सब आज काम कर रहे हैं। इसलिए मेरा मानना है कि शिक्षा ही वास्तव में भविष्य की दुनिया का निर्माण करती है। यह काम प्रौद्योगिकी नहीं कर सकती और व्यवसाय तो निश्चित रूप से नहीं। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में ही हमें सबसे अधिक कार्य करने होंगे।

जैसा हम समझ चुके हैं कि कुछ भी सार्वभौमिक नहीं है और न ही हो सकता है। सभी अपनी संस्कृति के वंशज होते हैं और मुझे लगता है कि युवा पीढ़ी को हमारी इन ग़लतियों, हमारे इन भ्रमों से बचाया जाना चाहिए। मैं फिर दोहराता हूँ कि हमें और अधिक संवाद करने की ज़रूरत है।

प्रगति - क्या रूस में भारत और दक्षिण एशिया के अन्य देशों के विशेषज्ञ पर्याप्त मात्रा में हैं या उनकी संख्या बहुत कम या बहुत अधिक है? आपके अनुसार निकट भविष्य में यह स्थिति क्या मोड़ ले सकती है; इन देशों के विशेषज्ञों की माँग बढ़ सकती है या घट सकती है?

मासलोव - विशेषज्ञों की संख्या तो कम है ही लेकिन एक समस्या भी है। हमें विशेषज्ञ तैयार करते समय पेशे पर, बाज़ार पर ध्यान देना चाहिए। हमें आज उन विशेषज्ञों की ज़रूरत नहीं है जो मात्र हिंदी, बंगाली, पंजाबी या कोई अन्य भाषा अच्छी तरह जानते हैं। भाषा एक लीवर (उत्तोलक) की तरह काम करती है लेकिन भाषा के साथ-साथ विशेषज्ञों का कोई पेशा भी होना चाहिए। लंबे समय तक हम लोगों को भारतीय भाषाओं में दक्ष होने का प्रशिक्षण देते रहे लेकिन भाषा का ज्ञान कोई पेशा नहीं है; ऐसे विशेषज्ञ मात्र भाषा-वैज्ञानिक या भाषाशास्त्री हो सकते हैं। आज हमें व्यवसाय, उद्यमशीलता, संस्कृति, राजनीति आदि जानने वाले लोगों की आवश्यकता है। और इस लिहाज़ से हमारे पास विशेषज्ञों की भारी कमी है। वर्तमान में रूस में केवल दो या तीन ऐसी संस्थाएँ हैं जो भारत के लिए विशेषज्ञ प्रशिक्षित करती हैं। बेशक़, यह पर्याप्त नहीं है। वर्तमान में हमें हर साल कम से कम 100 ऐसे स्नातक प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है जो भारत को अच्छी तरह से जानते हों। उनमें से कुछ अपने क्षेत्र में काम करेंगे, कुछ अपना पेशा छोड़ भी देंगे। मात्र विशेषज्ञ तैयार करना पर्याप्त नहीं है, अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण दे कर तैयार किया जाए। भारत के साथ निरंतर संपर्क में रहने की ज़रूरत है तथा छात्रों और शिक्षकों के बीच संचार की ज़रूरत है। मुझे लगता है कि निकट भविष्य में, 5-7 वर्षों के भीतर, हम इस श्रेणी के विशेषज्ञ तैयार करने में सफल हो जाएँगे।

और इस लिहाज़ से हमारे पास विशेषज्ञों की भारी कमी है। वर्तमान में रूस में केवल दो या तीन ऐसी संस्थाएँ हैं जो भारत के लिए विशेषज्ञ प्रशिक्षित करती हैं। बेशक़, यह पर्याप्त नहीं है। वर्तमान में हमें हर साल कम से कम 100 ऐसे स्नातक प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है जो भारत को अच्छी तरह से जानते हों। उनमें से कुछ अपने क्षेत्र में काम करेंगे, कुछ अपना पेशा छोड़ भी देंगे। मात्र विशेषज्ञ तैयार करना पर्याप्त नहीं है, अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि उन्हें व्यावहारिक प्रशिक्षण दे कर तैयार किया जाए।

प्रगति - क्या आप भारत गए हैं; भारत आपको कैसा लगता है?

मासलोव - मैं कई बार भारत गया हूँ, मुझे भारत बहुत पसंद है। मुझे प्राच्य-संस्कृतियाँ बहुत पसंद हैं। मैंने नई-दिल्ली, कोलकाता, गोवा के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दिए हैं। मैंने कई सैन्य-अकादमियों में भी व्याख्यान दिए हैं, हैदराबाद सैन्य अकादमी में भी। जैसे ही संस्थान से जुड़े नए काम ढर्रे पर आ जाएँगे, मैं बहुत ख़ुशी से फिर भारत जाऊँगा।

भाषा एक लीवर (उत्तोलक) की तरह काम करती है लेकिन भाषा के साथ-साथ विशेषज्ञों का कोई पेशा भी होना चाहिए। लंबे समय तक हम लोगों को भारतीय भाषाओं में दक्ष होने का प्रशिक्षण देते रहे लेकिन भाषा का ज्ञान कोई पेशा नहीं है; ऐसे विशेषज्ञ मात्र भाषा-वैज्ञानिक या भाषाशास्त्री हो सकते हैं। आज हमें व्यवसाय, उद्यमशीलता, संस्कृति, राजनीति आदि जानने वाले लोगों की आवश्यकता है।